16

गलील के उज़र में

बाइबल पाठ #5

IV. पहले से दूसरे फसह तक (क्रमशः)।

ग. यहूदिया से गलील में जाना।

1. जाने के कारण (मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:19, 20; यूहन्ना 4:1-3)।
2. सामरिया की घटना (यूहन्ना 4:4-42)।
3. गलील में पहुंचना (लूका 4:14; यूहन्ना 4:43-45)।

घ. गलील में यीशु की शिक्षा का एक सामान्य विवरण(मत्ती 4:17; मरकुस 1:14, 15; लूका 4:14, 15)।

ड. काना में दूसरा आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 4:46-54)।

च. कफरनहूम से गलील में जाना (मत्ती 4:13-16)।

छ. चार मछुआरों को बुलाना (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11)।

परिचय

जैसा कि यूहन्ना ने लिखा है, ''सब बातों का पहली बार'' पाठ यरूशलेम तथा यहूदिया में यीशु की प्रारम्भिक सेवकाई के बारे में था। इस पाठ में, दृश्य बदलकर गलील के उज़र में चला जाता है। सुसमाचार के सहदर्शी वृत्तांतों (मत्ती, मरकुस और लूका) में लगभग डेढ़ साल चली ''महान गलीली सेवकाई'' पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस पाठ में उस सेवकाई से जुड़ी तैयारी की बातों पर ध्यान दिया जाएगा।

उज़र की ओर जाने का समय
(मत्ती 4:12; मरकुस 1:14; लूका 3:19, 20; यूहन्ना 4:1-4)

यीशु और उसके चेले यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से भी अधिक लोगों को शिक्षा देकर बपतिस्मा देते हुए यहूदिया में अपनी सफलता की खुशी मना रहे थे (यूहन्ना 3:22, 26; 4:1)। अपनी सफलता के चरम तक पहुंचने पर, यीशु ने फैसला किया कि यहूदिया को छोड़कर गलील में वापस जाने का यही उचित समय है। इस विशेष समय के लिए दो तथ्यों का योगदान था।

मत्ती और मरकुस ने यह निर्णय लेने का एक कारण दिया है। मत्ती 4:12 कहता है,

''जब उसने यह सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया है [हेरोदेस के हाथ],[1] तो वह गलील को चला गया'' (देखें मरकुस 1:14)। हेरोदेस, टैट्रार्क (चौथाई का हाकिम), एक भतीजी और अपने भाई फिलिप की पत्नी हेरोदियास के साथ रह रहा था।[2] बपतिस्मा देने वाले निडर यूहन्ना ने हेरोदेस से कहा था, ''इस को रखना तुझे उचित नहीं है'' (मत्ती 14:4)। इससे हेरोदियास चिढ़ गई थी, और उसने हेरोदेस पर यूहन्ना को गिरफ़्तार करने का दबाव डाला था (मरकुस 6:17-19)। इस हाकिम ने ''यूहन्ना को बन्दीगृह में डाल दिया'' था (लूका 3:20)।

यह पढ़कर कि यीशु यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद गलील में चला गया, आपको लग सकता है कि वह हेरोदेस से बचना चाहता था, क्योंकि वह जान गया था कि हेरोदेस उसे कैद करना चाहता था, परन्तु वास्तव में मसीह हेरोदेस के देश में ही जा रहा था (देखें लूका 23:6, 7)। तो फिर यूहन्ना की गिरफ़्तारी के बाद यीशु ने गलील में जाने की जल्दी क्यों की? कुछ लोगों का विचार है कि यीशु उस क्षेत्र में यूहन्ना के चेलों को ढाढ़स दिलाने के लिए उज़र की ओर जा रहा था,[3] ताकि वे बिखर न जाएं।

यूहन्ना ने एक और कारण दिया है कि मसीह को यहूदिया से जाना उचित क्यों लगा: ''फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है, कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता है, और उन्हें बपतिस्मा देता है। ... तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया'' (यूहन्ना 4:1-3)। यीशु फरीसियों के साथ, कम से कम थोड़ी देर के लिए ही सही, सीधे टकराव से बचना चाहता था, इसलिए वह वहां से जहां उनका प्रभाव अधिक था, चला गया। यहूदिया में लगभग एक साल रहने के बाद, यीशु अपने चेलों के साथ, ''फिर गलील को चला गया'' (यूहन्ना 4:3)।[4]

विश्राम के लिए रुकना (यूहन्ना 4:4-42)

यहूदिया से गलील को जाने का सीधा मार्ग, सामरिया के बीच में से होकर ही जाता था,[5] परन्तु अधिकतर यहूदी सामरियों से अपनी नापसंदगी के कारण, यहूदिया से गलील को जाने के लिए ऊपर से घूमकर जाते थे अर्थात वे पूर्व से होते हुए, यरदन नदी को पार करके पूर्वी तट से होते हुए गलील में पहुंचते थे। फिर भी यीशु सामरिया से होकर सीधे उज़र की ओर गया।

यूहन्ना ने लिखा कि मसीह को ''सामरिया से होकर जाना अवश्य था'' (यूहन्ना 4:4)। हो सकता है कि उसका इस मार्ग से ''जाना अवश्य'' इसलिए हो कि वह जल्दी में था। सीधे मार्ग से जाकर उसका तीन दिन की यात्रा का समय बच सकता था। परन्तु यह तथ्य कि वह कई दिन सामरिया में रुका रहा (यूहन्ना 4:40), इसे असम्भव बना देता है। यह अधिक सम्भावना है कि सामरियों के साथ सम्पर्क बनाने के लिए उसका ''जाना अवश्य'' था। जहां यहूदी एक दोगली जाति को घृणित मानते थे, वहीं यीशु ने ''कटनी के लिए पक चुके'' खेतों को देखा (यूहन्ना 4:35)।

सामरिया के केन्द्र में, यीशु की मुलाकात कुएं पर एक स्त्री से हुई, जो मसीह की

सेवकाई में होने वाला सबसे शानदार वार्तालाप है। उस स्त्री के साथ यीशु के वार्तालाप को किसी अधर्मी व्यक्ति को विश्वास में लाने के लिए मॉडल के रूप में अध्ययन किया जाता है कि कैसे उसने उस स्त्री से सम्पर्क किया, कैसे उसमें रुचि जगाई, कैसे उसकी गलती सुधारी, कैसे उसने उसे नई सच्चाइयों में अगुआई दी, कैसे उसे उसका पाप बताया और विशेष रूप से कैसे उसके मन में विश्वास उत्पन्न किया।

इस एक सम्पर्क के परिणामस्वरूप, मसीह को समस्त नगर के लोगों को सिखाने का अवसर मिला। ''... उसके वचन के कारण और भी बहुतेरों ने विश्वास किया'' (यूहन्ना 4:41)।

गलील में काम का आरम्भ (मत्ती 4:13-17; मरकुस 1:14, 15; लूका 4:14, 15; यूहन्ना 4:43-54)

सामरियों के साथ कई दिन रहने के बाद, यीशु और उसके चेले एसड्रेलोन की तराई में से होते हुए उज़र की ओर चले गए। अन्त में वे दक्षिणी गलील की पहाड़ियों में जा पहुंचे। मसीह ने इस क्षेत्र में अपना सबसे बड़ा काम करना था।

उस समय यरूशलेम और यहूदिया, यहूदी मत के गढ़ थे, तो फिर यीशु ने गलील में अपने प्रयास क्यों केन्द्रित किए? इसके तीन सम्भावित कारण हैं: (1) यीशु का पालन-पोषण गलील में हुआ था, इसलिए वह इस इलाके को अच्छी तरह जानता था; (2) गलील घनी आबादी वाला क्षेत्र था; और (3) साधारणतया, धार्मिक परम्पराओं से अधिक न जुड़े होने के कारण यहूदियों की तुलना में गलीली लोगों ने उसे जल्दी ग्रहण करना था। यहूदा के अलावा सभी प्रेरित गलीली ही थे।

गर्मजोशी से स्वागत

यहूदिया में यीशु की सेवकाई की खबर उसके आगे-आगे चलती थी। यूहन्ना 4:45 कहता है ''जब वह गलील में आया, तो गलीली आनन्द के साथ उससे मिले; क्योंकि जितने काम उसने यरूशलेम में पर्व के समय किए थे, उन्होंने उन सब को देखा था, क्योंकि वे भी पर्व में गए थे'' (देखें यूहन्ना 2:23)।[6]

यहूदिया की तरह ही यीशु यहां भी प्रचार करने लगा। मरकुस ने लिखा है कि ''यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया। और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास[7] करो'' (1:14ख, 15; देखें मत्ती 4:17)। लूका ने लिखा है, ''... वह उनके आराधनालयों में उपदेश करता रहा, और सब उसकी बड़ाई करते थे'' (4:15)।[8] यह बहुत ही ज़बर्दस्त शुरुआत थी।

आश्चर्यकर्म

यहूदिया में रहते हुए यीशु ने आश्चर्यकर्म करने भी आरम्भ कर दिए। लूका 4:14क कहता है कि ''... यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा।'' यह यीशु द्वारा

आश्चर्यकर्मों से ''आत्मा की सामर्थ'' दिखाने की बात है। यीशु के लौटने के बाद पहला आश्चर्यकर्म[9] काना में हुआ था।

यीशु एक बार फिर वहां गया ''जहां उसने पानी को दाखरस बनाया था'' (यूहन्ना 4:46)। शायद नतनएल ने, जो वहीं का रहने वाला था (यूहन्ना 21:2), यीशु को अपने घर बुलाया था। निकट ही कफ़रनहूम में,[10] राजा के एक कर्मचारी[11] का पुत्र ''मरने पर था'' (यूहन्ना 4:46, 47)। यह जानकर कि यीशु काना में है, वह अपने पुत्र को चंगा करने के लिए उससे कहने आया।

उस अधिकारी ने यीशु को कफ़रनहूम में चलने का आग्रह किया, परन्तु मसीह ने उससे कहा, ''जा, तेरा पुत्र जीवित है'' (यूहन्ना 4:50)।[12] उसने यीशु पर विश्वास किया और घर चला गया। घर पहुंचकर उसे पता चला कि उसका लड़का उसी घड़ी चंगा हो गया था, जब यीशु ने कहा था कि वह जीवित है (यूहन्ना 4:50-53क)।[13] राजा के इस कर्मचारी ने बहुत प्रभावित होकर अपने ''सारे घराने ने (समेत) विश्वास किया''[14] (यूहन्ना 4:53ख)।

इस और अन्य आश्चर्यकर्मों की ''चर्चा आस-पास के सारे देश में फैल गई'' (लूका 4:14ख)। हर ज़ुबान पर यीशु का नाम चढ़ गया था।

कफ़रनहूम में जाना

गलील में यीशु के प्रारम्भिक कार्यों में एक कफ़रनहूम को अपने कार्यों का केन्द्र बनाना था।[15] मत्ती ने लिखा है कि यीशु ''गलील को चला गया और नासरत को छोड़कर कफ़रनहूम में, जो झील के किनारे ... जाकर रहने लगा'' (मत्ती 4:12ख, 13)।[16] कफ़रनहूम में यीशु का कोई निवास नहीं था (मत्ती 8:20)। परन्तु उसके चेलों ने रहने के लिए वहां कुछ अवश्य बनाया (मरकुस 1:21, 29)। अपनी गलीली सेवकाई के दौरान और इसके बाद यीशु कफ़रनहूम से अधिक देर के लिए बाहर नहीं गया। वह बाहर यहीं से जाता और वापस आ जाता था। (पढ़ें मरकुस 1:21, 29, 38, 39; 2:1.)

कफ़रनहूम ''जबूलून और नपताली के देश में'' था (मत्ती 4:13ख), जो इस्राएल के कनान में प्रवेश के समय उन दो गोत्रों को दिया गया, सामान्य क्षेत्र था (यहोशू 19)। मत्ती ने अपने पाठकों को सूचित किया कि यीशु के वहां जाने से मसीहा के बारे में की गई एक प्रसिद्ध भविष्यवाणी पूरी हुई (मत्ती 4:14-16; देखें यशायाह 9:1, 2[17])।

सहायता की आवश्यकता! (मत्ती 4:18-22; मरकुस 1:16-20; लूका 5:1-11)

यीशु के लिए उजरी राज्य में ज़ोरदार अभियान शुरू करने के लिए पूरी ज़मीन तैयार हो चुकी थी। उसे एक और घटक की आवश्यकता थी: पूर्णकालिक चेले। मत्ती 4, मरकुस 1 और लूका 5 चार मछुआरों पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास के बुलाये जाने के बारे में बताते हैं। यह उनमें से अधिकतर या सबके लिए दूसरी पुकार थी, ज़्योंकि वे

यहूदिया की सेवकाई के समय यीशु के चेले थे।[18]

अपने अध्ययन में आगे हम देखेंगे कि चेले बनने के लिए यीशु की बुलाहट के तीन चरण थे। पहला चरण उसके पीछे होकर उससे सीखने का निमन्त्रण था। इस बुलाहट के लिए घर और कामकाज छोड़ने की आवश्यकता नहीं थी, जैसा उन मछुआरों से पता चलता है, जो अपने पुराने व्यवसाय में लग गए थे। सेवकाई के दौरान यीशु के पास कई अंशकालिक कार्यकर्ज़ा थे। एक बार उसने प्रचार करने के लिए सज़र चेलों को भेजा था (लूका 10:1-20)।

दूसरा चरण पूर्णकालिक चेले बनने का था। इस बुलाहट को स्वीकार करने वालों को यीशु के साथ जाना और रहना आवश्यक था। इन चेलों की संज़्या काफी कम थी। हमारी वर्तमान आयत में चार लोगों का बुलाया जाना, इस दूसरी श्रेणी में आता है।

तीसरा चरण तब आना था, जब यीशु ने अपने चेलों में से बारह को प्रेरित बनाने के लिए चुनना था। उस यादगारी घटना का हम बाद में अध्ययन करेंगे। परन्तु अभी हम यीशु के पज़्के साथी बनने के लिए चार मछुआरों के बुलाए जाने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं।

सुसमाचार के तीनों सहदर्शी वृज़ांत इस बुलाए जाने के बारे में बताते हैं। तीन पदों में एक ही बात को इकट्ठा करने में कठिनाई का पता चलता है। मज़ी और मरकुस उन चार लोगों के बारे में बताते हैं जिन्हें बुलाया जाता है, जबकि लूका केवल तीन का उल्लेख करता है। यदि आपको केवल मज़ी और मरकुस का वृज़ांत ही पढ़ना हो, तो आपको पता नहीं चलेगा कि कोई और भी था। परन्तु लूका ने लिखा है कि यीशु भीड़ में प्रचार करता था, और उसने बहुत-सी मछलियां पकड़ने का आश्चर्यकर्म भी जोड़ा है।

इन भिन्नताओं के कारण कुछ लोगों का निष्कर्ष है कि लूका हमें मज़ी और मरकुस के वृज़ांत से अलग घटना के बारे में बताता है। परन्तु बहुत से विवरणों से संकेत मिलता है कि यह वही घटना है। तीनों वृज़ांतों में उल्लेख है (1) वही जगह-गलील की झील[19] (मज़ी 4:18; मरकुस 1:16; लूका 5:1); (2) तीनों वही लोग हैं-पतरस, याकूब और यूहन्ना (मज़ी 4:18, 21; मरकुस 1:16, 19; लूका 5:3, 10[20]); (3) वही गतिविधि-जाल साफ़ करना/सुधारना (मज़ी 4:21; मरकुस 1:19; लूका 5:2); (4) वही बुलाहट-मनुष्यों के पकड़ने वाले बनना (मज़ी 4:19; मरकुस 1:17; लूका 5:10); और (5) वही जवाब-छोड़कर उसके पीछे हो लेना (मज़ी 4:20, 22; मरकुस 1:18, 20; लूका 5:11)।

यदि यह एक ही अवसर की बात है तो इन वृज़ांतों में मेल कैसे हो सकता है ? अगले दृश्य पर विचार करें।[21]

यीशु और उसके चेलों के गलील में वापस आने पर पतरस, याकूब, यूहन्ना और अन्द्रियास चारों ही चेलों के अपने-अपने काम पर अर्थात गलील की झील में मछलियां पकड़ने चले गए। एक सुबह, यीशु झील के तट पर उनके पास ही, जहां वे मछलियां पकड़ा करते थे, घूम रहा था। सारी रात कोशिश करने पर कुछ हाथ न आने पर, याकूब और यूहन्ना थककर अपने जाल साफ़ कर रहे थे और सुधार रहे थे। दूसरों से अधिक हठी पतरस ने कोशिश जारी रखी; आखिर उसे भी हार माननी पड़ी। वह और अन्द्रियास दोनों बाहर आ गए।

उसी समय यह बात फैली कि यीशु वहां है। भीड़ इकट्ठी हो गई। यीशु उनमें प्रचार करने लगा। लोगों के दबाव डालने पर वह पतरस की किश्ती में बैठ गया और किश्ती को थोड़ा आगे झील में ले जाने को कहा। उसने किश्ती से ही अपना संदेश दिया।

इसके बाद एक असामान्य आश्चर्यकर्म हुआ: मछलियों का अद्‌भुत ढंग से पकड़ा जाना, जिससे मछुआरे चकित हो गए और पतरस घुटनों पर झुकने को विवश हो गया।[22] इस तरह यीशु ने अपनी पुकार का जवाब देने के लिए इन मछुआरे के मनों को तैयार किया। मत्ती ने इस बुलाहट और उनके उज़र को लिखा है: ''और उनसे कहा, मेरे पीछे चले आओ, मैं तुमको मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।[23] वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए'' (मत्ती 4:19, 20; देखें 4:21, 22; मरकुस 1:17-20)। लूका का वृज़ांत मूलत: वही है, जिसमें उसने यीशु की बुलाहट तथा उनके जवाब को इन शज़्दों में व्यज़्त किया है: ''... अब से तू मनुष्यों को जीवता पकड़ा करेगा। और वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए'' (लूका 5:10, 11)।

इस प्रकार, यीशु ने सबसे पहले पज़्के और हर समय उसके साथ रहने वाले चेले बनने के लिए बुलाया। इस घटना के दूरगामी परिणाम हुए। अब यीशु ने न केवल इनके साथ दिन-रात रहना था, बल्कि ये चार लोग प्रेरितों के रूप में चुने जाने वाले बारह के समूह का एक तिहाई भाग भी होने थे। इसके अलावा, इनमें से तीन यीशु के ''अति निकट'' लोगों में से गिने जाने थे (मरकुस 5:37; 9:2; 14:33)।

सारांश

गलील में यीशु की सेवकाई के लिए पूरी तैयारी हो चुकी थी। अगले पाठ में, हम देखेंगे कि यीशु ने अपने प्रचार तथा इस क्षेत्र में चंगाई की यात्राओं का आरज़्भ कैसे किया। रोमांचकारी दिन आने वाले थे!

टिप्पणियां

[1]देखें मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14-29. [2]इस पुसतक में आगे *कुछ हेरोदेस* चार्ट देखें। [3]बहुत से लोगों का विचार है कि ऐनोन (यूहन्ना 3:23) यहूदिया के दक्षिण में था। यह सामरिया में हो सकता है। (''इस पुस्तक में बताई गई मसीह की यात्राएं'' वाला मानचित्र देखें।) [4]यूहन्ना 4:8 से हमें पता चलता है कि यीशु के चेले उसके साथ जाते थे। [5]''इस पुस्तक में बताई गई मसीह की यात्राएं'' वाला मानचित्र देखें। [6]यूहन्ना 4:44 में यूहन्ना ने एक अजीब टिप्पणी जोड़ी है। हम पढ़ते हैं, ''ज़्योंकि यीशु ने आप ही साक्षी दी, कि भविष्यवज़्ता अपने देश में आदर नहीं पाता।'' यीशु के यहूदिया से जाने का एक कारण यह भी हो सकता है, परन्तु सुसमाचार के वृज़ांतों में बाकी हर जगह, गलील को यीशु के ''अपना देश'' के रूप में दिखाया गया है। शायद यह इस विचार का संकेत देने के लिए है कि यीशु जानता था कि गलील में उत्साह से उसका स्वागत स्थाई नहीं है। (देखें मत्ती 13:57; मरकुस 6:4; लूका 4:24।) [7]''मन फिराओ और विश्वास करो'' का क्रम कुछ अटपटा लगता है। सामान्यतया लोग पहले यीशु में विश्वास करने के लिए आते हैं, जो उनके पापों से मन फिराने का कारण बनता है। याद रखें कि यीशु यहूदियों में प्रचार करता था, जिनका पहले से

परमेश्वर में विश्वास था और पवित्र शास्त्र की थोड़ी-बहुत जानकारी भी। उन्हें पहले परमेश्वर की व्यवस्था का पालन न कर पाने के लिए मन फिराने की आवश्यकता थी। फिर उन्हें मसीहा (ख्रिस्तुस) को जानने और उसमें विश्वास करने की आवश्यकता थी। [8]सामान्यतया, आराधनालयों में सब्त के दिन दो बार औपचारिक सभाएं होती थीं, एक बार सोमवार को, और एक बार गुरुवार को। कई नगरों में सोमवार और गुरुवार, ''बाज़ार के दिन'' होते थे, जिनमें काफ़ी भीड़ होती थी। अन्य समयों पर कोई सभा करने के लिए भी आराधनालय खोले जा सकते थे। इन परिस्थितियों से यीशु को सिखाने का अच्छा अवसर मिल जाता था। [9]यूहन्ना 4:54 का ''दूसरा आश्चर्यकर्म'' वाक्यांश स्पष्टतया गलील में किए गए दूसरे आश्चर्यकर्म को कहा गया है; पहला चिह्न या आश्चर्यकर्म पानी का मय बनाना था (2:11), और यह दूसरा चिह्न था। निश्चय ही, यीशु ने यहूदिया में रहते हुए और चिह्न/आश्चर्यकर्म भी किए थे (2:23; 3:2)। [10]कफ़रनहूम काना के उज़र में और बीस या इससे अधिक मील पूर्व की ओर (''इस पुस्तक में बताई गई मसीह की यात्राएं'' वाला मानचित्र देखें) था।

[11]यह व्यक्ति सम्भवतया हेरोदेस के दरबार का कोई अधिकारी था। [12]इस अधिकारी को यीशु का आरम्भिक जवाब (यूहन्ना 4:48) असामान्य ही है। ध्यान दें कि यह उसे निजी तौर पर डांट नहीं बल्कि साधारण मनुष्य जाति के लिए एक अभियोग था। यूनानी भाषा में ''तुम'' बहुवचन है। शायद यीशु सामरियों से गलीलियों की तुलना कर रहा था, जिन्होंने ''उसके वचन के कारण'' (आयत 41) आश्चर्यकर्मों की आवश्यकता के बिना विश्वास किया था। शायद ये शब्द मनुष्य के विश्वास को परखने के लिए थे। जो भी हो ये शब्द उस अधिकारी को रोकते नहीं हैं, जिसने यीशु में विश्वास कर लिया था। [13]यह मत्ती 8:5-13 और लूका 7:1-10 वाली सूबेदार के सेवक की चंगाई; मत्ती 15:22-28 और मरकुस 7:25-30 कनानी स्त्री की बेटी की चंगाई; और लूका 17:11-37 वाले दस कोढ़ियों की चंगाई सहित उन चार ज्ञात चंगाइयों में से एक है, जो यीशु ने दूर से की थीं। [14]अपने घर के लोगों से अपने विश्वास को साझा करने की यह सराहनीय मिसाल है। [15]यीशु कफ़रनहूम में पहले गया था (देखें यूहन्ना 2:12)। [16]कई एक रूप में यह समझाने के लिए कि यीशु नासरत से कफ़रनहूम में ज्यों गया, यहां पर लूका 4:16-30 जोड़ा जाता है। मैं इसे दो कारणों से शामिल नहीं करता: (1) इस पद में बताया गया है कि ''कफ़रनहूम में किया गया'' काम ज्या था (लूका 4:23), परन्तु हमारी एकरूपता में यहां पर कफ़रनहूम वाली कोई बात नहीं हुई थी। (2) ठुकराए जाने की चरम प्रकृति गलील में यीशु की सेवकाई के अन्तिम भाग से अधिक मेल खाती लगती है। परन्तु आप यहां पर यह कहानी भी जोड़ सकते हैं। [17]इस भविष्यवाणी की 6 और 7 आयतें पढ़ें, जिनसे आप अधिक परिचित हों। [18]यूहन्ना 1:40, 41 विशेष तौर पर अन्द्रियास और पतरस का उल्लेख करता है। पहले हमने ध्यान दिया था कि अनाम चेला (यूहन्ना 1:37, 40) यूहन्ना ही होगा। हमने यह भी अवलोकन किया था कि इस शब्द रचना से सुझाव मिल सकता है कि यूहन्ना ने अपने भाई याकूब को वैसे ही ढूंढा जैसे अन्द्रियास ने अपने भाई पतरस मिला था। [19]लूका ''गन्नेसरत की झील'' (5:1) बताता है, परन्तु यह गलील की झील का ही दूसरा नाम था। पुस्तक में आगे ''गलील की झील'' का मानचित्र देखें। [20]मत्ती और मरकुस भी चौथे आदमी, अन्द्रियास के बारे में बताते हैं। लूका विशेष तौर पर अन्द्रियास का उल्लेख नहीं करता, परन्तु पतरस के साथ किश्ती में कोई और था, जो याकूब या यूहन्ना नहीं था (लूका 5:6, 7, 10)। उसका भाई अन्द्रियास उसके साथ मछुआरे के रूप में काम करता था (मत्ती 4:18)।

[21]विवरणों में अन्तर होने पर इतना जानना ही काफी होता है कि यह अन्तर दूर किए जा सकते हैं, चाहे हमें यह पता न ही हो कि यह कैसे हो सकता है। [22]इन घटनाओं पर विस्तृत चर्चा के लिए, ''चेले बनने की बुलाहट'' पाठ देखें। [23]''आओ मैं तुम को बनाऊं'' शब्दों पर विशेष ज़ोर देने के लिए विल एड वार्न के लैक्चर नोट्स में: ''कोई अपने आप इंजीनियर तो बन सकता है, परन्तु अपने आप मसीही नहीं बन सकता'' (विल एड वारेन, क्लास सिलेबस, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट: द सिनोप्टिक गॉस्पल्स,* हार्डिंग यूनिवर्सिटी, 1991, 16)।